11-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**"मीठेबच्चे - तुम्हारा फ़र्ज है सबको स्थायी सुख और शान्ति का रास्ता बताना, शान्ति में रहो और शान्ति की बख्शीश (इनाम) दो"**

**प्रश्नः- किस गुह्य राज़ को समझने के लिए बेहद की बुद्धि चाहिए?**

**उत्तरः-** ड्रामा की जो सीन जिस समय चलनी है, उस समय ही चलेगी। इसकी एक्यूरेट आयु है, बाप भी अपने एक्यूरेट टाइम पर आते हैं, इसमें एक सेकेण्ड का भी फ़र्क नहीं पड़ सकता है। पूरे 5 हज़ार वर्ष के बाद बाप आकर प्रवेश करते हैं, यह गुह्य राज़ समझने के लिए बेहद की बुद्धि चाहिए।

**गीतः-बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम....** Click

बदल जाये दुनियाँ न बदलेंगे हम
तुम्हारी क़सम
तुम्हारे हैं कि जब तक दम में है दम
तुम्हारी क़सम

कहो नाम का उल्फ़त का बदनाम क्यों है
हमारी वफ़ाओं पे इल्ज़ाम क्यों है
बताओ तो होगा तुम्हारा क़रम
तुम्हारी क़सम
बदल जाये दुनियाँ ...

ये माना है मुश्किल मुहब्बत की राहें
अगर डाल दो तुम बाहों में बाहें
खुशी से सहेंगे तुम्हारे सितम
तुम्हारी क़सम
बदल जाये दुनियाँ ...

जहाँ तक जहाँ के नज़ारे रहेंगे
तुम्हारे रहे हैं तुम्हारे रहेंगे
न डोलेंगे उल्फ़त में अपने क़दम
तुम्हारी क़सम
बदल जाये दुनियाँ ...

**ओम् शान्ति।** रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों को रास्ता बताते हैं - शान्तिधाम

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

UNITED NATIONS

WHOLESALE

As Certain as Death
Words of world Almighty

और सुखधाम का। इस समय सब मनुष्य विश्व में शान्ति चाहते हैं। हर एक इन्डिविज्युअल भी चाहते हैं और विश्व में भी शान्ति चाहते हैं। हर एक कहते हैं मन की शान्ति चाहिए। अब वह भी कहाँ से मिल सकती है। शान्ति का सागर तो बाप ही है, जिससे वर्सा मिल सकता है। इन्डिविज्युअल भी मिलता है, होलसेल भी मिलता है। यानी सबको मिलता है। जो बच्चे पढ़ते हैं, समझ सकते हैं हम शान्ति का वर्सा लेने अपना भी पुरुषार्थ करते हैं, औरों को रास्ता बताते हैं। विश्व में शान्ति तो होनी ही है। चाहे कोई वर्सा लेने आये वा न आये। बच्चों का फर्ज है, सब बच्चों को शान्ति देना है। यह समझ नहीं सकते, 2-4 को वर्सा मिलने से क्या होगा। कोई को रास्ता बताया जाता है, परन्तु निश्चय न होने कारण दूसरों को आपसमान बना नहीं सकते। जो निश्चयबुद्धि हैं वह समझते हैं बाबा से हमको वर मिल रहा है। वरदान देते हैं ना - आयुश्वान भव, धनवान भव भी कहते हैं। सिर्फ कहने से तो आशीर्वाद नहीं मिल सकती। आशीर्वाद मांगते हैं तो उनको समझाया जाता है

आयुष्मान भव

तुमको शान्ति चाहिए तो ऐसे पुरुषार्थ करो।

ये पक्का समझ लो..

मेहनत से सब कुछ मिलेगा। भक्ति मार्ग में कितनी

आशीर्वाद लेते हैं। माँ, बाप, टीचर, गुरू आदि सबसे मांगते हैं - हम सुखी और शान्त रहें। परन्तु रह नहीं सकते क्योंकि इतने ढेर मनुष्य हैं, उनको सुख-शान्ति मिल कैसे सकती। गाते भी हैं - शान्ति देवा। बुद्धि में आता है - हे परमपिता परमात्मा, हमको शान्ति की बख्शीश करो। वास्तव में

Definition of

बख्शीश उसको कहा जाता है जो चीज़ उठाकर देवें। कहेंगे यह तुमको बख्शीश है, इनाम है। बाप कहते हैं बख्शीश कोई कितनी भी करते हैं, धन की, मकान की, कपड़े आदि की करते हैं, वह हुआ दान -पुण्य अल्पकाल के लिए। मनुष्य, मनुष्य को देते हैं। साहूकार गरीब को अथवा साहूकार, साहूकार को देते आये हैं। परन्तु यह तो है शान्ति और सुख स्थायी। यहाँ तो कोई एक जन्म के लिए भी सुख-शान्ति नहीं दे सकते क्योंकि उनके पास है ही नहीं। देने वाला एक ही बाप है। उनको सुख-शान्ति-पवित्रता का सागर कहा जाता है। ऊंच ते ऊंच भगवान की ही महिमा गाई जाती है। समझते

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

हैं उनसे ही शान्ति मिलेगी। फिर वह साधू-सन्त आदि पास जाते हैं क्योंकि भक्ति मार्ग है ना तो फेरा फिराते रहते हैं। वह सब है अल्पकाल के लिए पुरुषार्थ। तुम बच्चों का अभी वह सब बन्द हो जाता है। तुम लिखते भी हो बेहद के बाप से 100 प्रतिशत पवित्रता, सुख, शान्ति का वर्सा पा सकते हो। यहाँ 100 प्रतिशत अपवित्रता, दु:ख, अशान्ति है। परन्तु मनुष्य समझते नहीं। कहते ऋषि-मुनि आदि तो पवित्र हैं। परन्तु पैदाइस तो फिर भी विष से होती है ना। मूल बात ही यह है। रावण राज्य में पवित्रता हो न सके। पवित्रता-सुख आदि सबका सागर एक ही बाप है।

How lucky and Great we are...!

पाना था सो पा लीया...

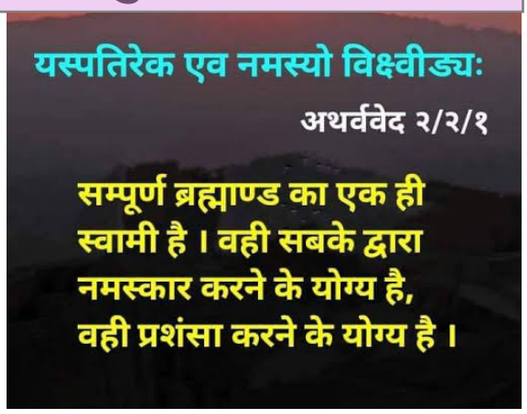

तुम जानते हो हमको शिवबाबा से 21 जन्म अर्थात् आधाकल्प 2500 वर्ष के लिए वर्सा मिलता है। यह तो गैरन्टी है। आधा-कल्प सुखधाम, आधाकल्प है दु:खधाम। सृष्टि के दो भाग हैं - एक नई, एक पुरानी। परन्तु नई कब, पुरानी कब होती

है, यह भी जानते नहीं। झाड़ की आयु इतनी एक्यूरेट बता न सकें। अभी बाप द्वारा तुम इस झाड़ को जानते हो। यह 5 हज़ार वर्ष का पुराना झाड़ है, इनकी एक्यूरेट आयु का तुमको पता है, और जो झाड़ होते हैं उनकी आयु का किसको पता नहीं होता है, अन्दाज़ बता देते हैं। तूफान आया, झाड़ गिरा, आयु पूरी हो गई। मनुष्यों का भी अचानक मौत होता रहता है। इस बेहद के झाड़ की आयु पूरे 5 हज़ार वर्ष है। इसमें एक दिन न कम, न जास्ती हो सकता है। यह बना-बनाया झाड़ है। इसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। ड्रामा में जो सीन जिस समय चलनी है, उस समय ही चलेगी। हूबहू रिपीट होना है। आयु भी एक्यूरेट है। बाप को भी नई दुनिया स्थापन करने आना है। एक्यूरेट टाइम पर आते हैं। एक सेकेण्ड का भी उसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। यह भी अब तुम्हारी बेहद की बुद्धि हुई। तुम ही समझ सकते हो। पूरे 5 हज़ार वर्ष बाद बाप आकर प्रवेश करते हैं, इसलिए शिवरात्रि कहते हैं। कृष्ण के लिए जन्माष्टमी कहते हैं। शिव की जन्माष्टमी नहीं कहते, शिव की रात्रि

Point to be Noted

Point to ponder

How Great we are...!




Secret Revealed

कहते हैं क्योंकि अगर जन्म हो तो फिर मौत भी हो। मनुष्यों का जन्म दिन कहेंगे। शिव के लिए हमेशा शिवरात्रि कहते हैं। दुनिया में इन बातों का कुछ भी पता नहीं। तुम समझते हो शिवरात्रि क्यों कहते हैं, जन्माष्टमी क्यों नही कहते। उनका जन्म दिव्य अलौकिक है, जो और कोई का हो नहीं सकता। यह कोई जानते नहीं - शिवबाबा कब, कैसे आते हैं। शिवरात्रि का अर्थ क्या है, तुम ही जानते हो। यह है बेहद की रात। भक्ति की रात पूरी हो दिन होता है। ब्रह्मा की रात और दिन तो फिर ब्राह्मणों का भी हुआ। एक ब्रह्मा का खेल थोड़ेही चलता है। अब तुम जानते हो, अब दिन शुरू होना है। पढ़ते-पढ़ते जाए अपने घर पहुँचेंगे, फिर दिन में आयेंगे। आधा-कल्प दिन और आधाकल्प रात गाई जाती है परन्तु किसकी भी बुद्धि में नहीं आता। वो लोग तो कहेंगे कि कलियुग की आयु 40 हज़ार वर्ष बाकी है, सतयुग की लाखों वर्ष है फिर आधा-आधा का हिसाब ठहरता नहीं। कल्प की आयु को कोई भी जानते नहीं। तुम सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। यह

But we know, How Lucky & Great we are..!

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत:।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
Imp.
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥ Adhyay-4







Po धारणा सेवा M.imp.

वाह रे मैं...

Again & Again & Again - - - -

5 हज़ार वर्ष के बाद सृष्टि चक्र लगाती रहती है। विश्व तो है ही, उनमें पार्ट बजाते-बजाते मनुष्य ही तंग हो जाते हैं। यह क्या आवागमन है। अगर 84 लाख जन्मों का आवागमन होता तो पता नहीं क्या होता। न जानने के कारण कल्प की आयु भी बढ़ा दी है। अभी तुम बच्चे बाप से सम्मुख पढ़ रहे हो। अन्दर में भासना आती है - हम प्रैक्टिकल में बैठेहैं। पुरुषोत्तम संगमयुग को भी जरूर आना है। कब आता है, कैसे आता है - यह कोई भी नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो तो कितना गद्गद् होना चाहिए। तुम्हीं कल्प-कल्प बाप से वर्सा लेते हो अर्थात् माया पर जीत पाते हो फिर हारते हो। यह है बेहद की हार और जीत। उन राजाओं की तो बहुत ही हार-जीत होती रहती है। अनेक लड़ाइयाँ लगती रहती हैं। छोटी-सी लड़ाई लगती है तो कह देते अब हमने जीता। क्या जीता? थोड़े से टुकड़े को जीता। बड़ी लड़ाई में हारते हैं तो फिर झण्डा गिरा देते हैं। पहले-पहले तो एक राजा होता है फिर और-और वृद्धि होते जाते हैं। पहले-पहले इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था फिर और राजायें

But we know, How Lucky & Great we are..!

कापारी खुशी

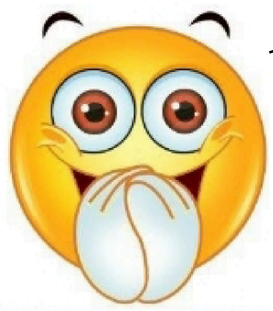

आने शुरू हुए। जैसे पोप का दिखाते हैं। पहले एक था फिर नम्बरवार और पोप भी बैठते गये। किसकी मृत्यु का तो ठिकाना ही नहीं है ना।

मैं कौन, मेरा कौन...!

कापारी खुशी

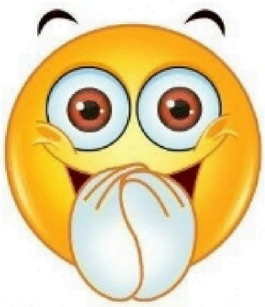

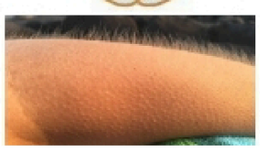

तुम बच्चे जानते हो हमको बाबा अमर बना रहे हैं। अमरपुरी का मालिक बना रहे हैं, कितनी खुशी होनी चाहिए। यह है मृत्यु-लोक। वह है अमरलोक। इन बातों को नया कोई समझ न सके। उनको मज़ा नहीं आयेगा, जितना पुरानों को आयेगा। दिन -प्रतिदिन वृद्धि को पाते रहते हैं। निश्चय पक्का हो जाता है। इसमें सहनशीलता भी बहुत होनी चाहिए। यह तो आसुरी दुनिया है, दु:ख देने में देरी नहीं करते। तुम्हारी आत्मा कहती है हम अभी बाबा की श्रीमत पर चल रहे हैं। हम संगमयुग पर हैं। बाकी सब कलियुग में हैं। हम अभी पुरुषोत्तम बन रहे हैं। पुरुषों में उत्तम पुरुष पढ़ाई से ही बनते हैं। पढ़ाई से ही चीफ जस्टिस आदि बनते हैं ना। तुमको बाप पढ़ाते हैं। इस पढ़ाई से ही अपने

चढ़ाओ नशा...

☑ EXCELLENT
☐ VERY GOOD
☐ GOOD
☐ FAIR
☐ POOR
☐ N/A

11-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पुरुषार्थ अनुसार पद पाते हो। जितना जो पढ़ेंगे उतना ग्रेड मिलेगी। इसमें राजाई की ग्रेड है। वैसे उस पढ़ाई में राजाई की ग्रेड नहीं होती है। तुम जानते हो हम राजाओं का राजा बन रहे हैं। तो अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। हम डबल सिरताज बहुत ऊंच बनते हैं। भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं। कभी कोई समझ न सके कि निराकार बाप कैसे आकर पढ़ाते हैं। मनुष्य पुकारते भी हैं - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। फिर भी पावन बनते नहीं। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम एक तरफ पुकारते हो कि पतित-पावन आओ, अब मैं आया हूँ कहता हूँ बच्चे पतितपना छोड़ दो, तो तुम छोड़ते क्यों नहीं। ऐसे थोड़ेही बाप तुमको पावन बनाये और तुम पतित बनते रहो। ढेर ऐसे पतित बनते हैं। कोई सत्य बताते हैं, बाबा यह भूल हो गई। बाबा कहते हैं कोई भी पाप कर्म हो जाए तो फौरन बताओ। कोई सच, कोई झूठ बोलते हैं। कौन पूछते हैं? मैं थोड़ेही एक-एक के अन्दर को बैठ जानूँगा, यह तो हो न सके। मैं आता ही हूँ सिर्फ राय देने। पावन नहीं बनेंगे तो तुम्हारा

King of the Kings

यह परम ज्ञान अब तक
ना पढ़ा ना लिखा गया है किताबों में
भगवान पढ़ायेंगे सम्मुख
सोचा ना देखा ख्वाबों में
प्रभु मिलन का यह प्यारा अनुभव
शब्दों में कहा नहीं जाता है
भगवान तुम्हारा ज्ञान सिमर कर

But we know, How Lucky & Great we are..!

चढ़ाओ नशा...

Irony

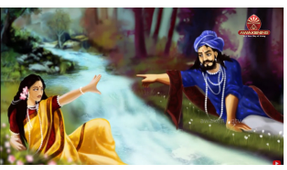

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



God says : इसमें तेरा घाटा, मेरा कुछ नहीं जाता...

ही नुकसान है। मेहनत कर पावन से फिर पतित बन जायेंगे, तो की कमाई चट हो जायेगी। लज्जा आयेगी हम खुद ही पतित बन पड़े हैं फिर दूसरे को कैसे कहेंगे कि पावन बनो। अन्दर खायेगा कि हमने कितना फरमान का उल्लंघन किया। यहाँ तुम बाप से डायरेक्ट प्रतिज्ञा करते हो, जानते हो बाबा हमको सुखधाम-शान्तिधाम का मालिक बना रहे हैं। हाजिर नाजिर है, हम उनके सम्मुख बैठेहैं।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

इनमें पहले यह नॉलेज थोड़ेही थी। न कोई गुरू ही था - जिसने नॉलेज दी। Simple Logic अगर गुरू होता तो सिर्फ एक को ज्ञान देंगे क्या। गुरूओं के फालोअर्स तो बहुत होते हैं ना। एक थोड़ेही होगा। यह समझने की बातें हैं ना। सतगुरू है ही एक। वह हमको रास्ता बताते हैं। हम फिर दूसरों को बताते हैं। तुम सबको कहते हो - बाप को याद करो। बस। ऊंच ते ऊंच बाप को याद करने से ही ऊंच पद मिलेगा।

How Great we are...!

तुम राजाओं के राजा बनते हो। तुम्हारे पास अनगिनत धन होगा। तुम अपनी झोली भरते हो ना। तुम जानते हो बाबा हमारी झोली खूब भर रहे हैं। कहते हैं कुबेर के पास बहुत धन था। वास्तव में

swamaan

तुम हर एक कुबेर हो। तुमको वैकुण्ठ रूपी खजाना मिल जाता है। खुदा दोस्त की भी कहानी है। उनको जो पहले मिलता था उसको एक दिन के लिए बादशाही देते थे। यह सब दृष्टान्त हैं। अल्लाह माना बाप, वह अवलदीन रचता है। फिर साक्षात्कार हो जाता है। तुम जानते हो बरोबर हम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

# धारणा के लिए मुख्य सार:-

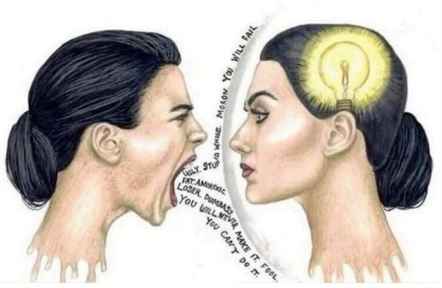

1) इस आसुरी दुनिया में बहुत-बहुत सहनशील बनकर रहना है। कोई गाली दे, दु:ख दे तो भी सहन करना है। बाप की श्रीमत कभी नहीं छोड़नी है।

World Almighty Authority

2) डायरेक्ट बाप ने पावन बनने का फरमान किया है इसलिए कभी भी पतित नहीं बनना है। कभी कोई पाप हो तो छिपाना नहीं है।

**वरदान:-** **एकनामी और इकॉनामी के पाठ द्वारा हलचल में भी अचल-अडोल भव**

समय प्रमाण वायुमण्डल अशान्ति और हलचल का बढ़ता जा रहा है,

ऐसे समय पर अचल अडोल रहने के लिए बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए। इसके लिए समय प्रमाण टचिंग और कैचिंग पावर की आवश्यकता है इसको बढ़ाने के लिए एकनामी और इकॉनामी वाले बनो।

एकनामी और इकॉनामी करने वाले बच्चों की लाइन क्लीयर होने के कारण बापदादा के डायरेक्शन को सहज कैच कर हलचल में भी अचल-अडोल रहते हैं।

**स्लोगन:-** स्थूल सूक्ष्म कामनाओं का त्याग करो तब किसी भी बात का सामना कर सकेंगे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

## अव्यक्त इशारे -

## स्वयं और सर्व के प्रति मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी, इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी।

स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी।

इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है - "सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना"।

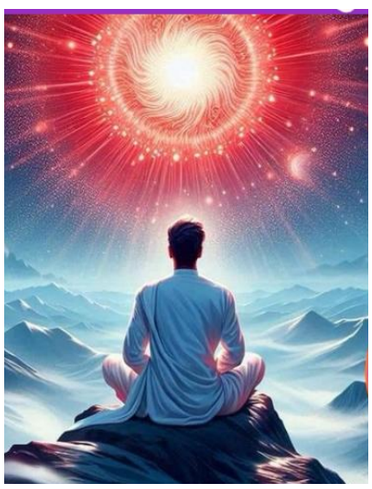

**तमोगुणी वातावरण से सेफ्टी का साधन - बाप का साथ**

अपने को इस पुरानी दुनिया में रहते कमल पुष्प के समान न्यारे और बाप के अति प्यारे अनुभव करते हो? जैसे कमल का पुष्प कीचड़ में रहते भी न्यारा

62

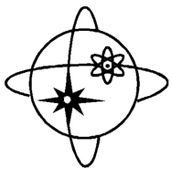

सदा न्यारे कौन होंगे?

रहता है, ऐसे पुरानी दुनिया में रहते हुए, तमोगुणी वातावरण से न्यारे रहते हो? तमोगुणी वातावरण का प्रभाव तो नहीं पड़ता। जो सदा बाप को अपना साथी बनाते और साक्षी हो पार्ट बजाते वह सदा न्यारे होंगे। जैसे वाटरप्रूफ होता है ना तो कितना भी पानी पड़े लेकिन एक बूँद भी असर नहीं करेगी। ऐसे सदा मायाप्रूफ हो कि माया का असर होता है? जब बाप के साथ का किनारा करते हो तब असर होता है। किनारा देख माया अपना वार कर देती हैं। सदा साथ रहो तो माया का वार नहीं हो सकता। सभी बच्चों को मायाजीत बनने का वरदान है लेकिन मायाजीत का पेपर तो होगा ना! पास नही होंगे तो पास विद ऑनर कैसे कहलायेंगे। सदा यह याद रखो कि हम सर्वशक्तिवान के साथ हैं। अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशक्तिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए। सदा अपने भाग्य का सितारा चमकता हुआ देखो। दुनिया वाले आज भी आपके भाग्य का वर्णन कर रहे हैं, तो अपने भाग्य का सितारा देखते रहो।

समझा?

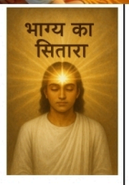


11/10/25

**(30.01.1979)**

## 7.3 परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाओ :

11/10/25

अमृतवेले से रात तक जो भी देखते हो, सुनते हो, सोचते हो वा कर्म करते हो, उसको लौकिक से अलौकिक में परिवर्तन करो। यह प्रैक्टिस है बहुत सहज। लेकिन अटेन्शन रखने की आवश्यकता है जैसे शरीर की क्रियायें — खाना-पीना-चलना स्वत: है, सहज रीति करते रहते हो, तो शरीर की क्रियाओं के साथ-साथ आत्मा का मार्ग, आत्मा का भोजन, आत्मा का पुरुषार्थ अर्थात् चलना, आत्मा का सैर, आत्मा-रूप का देखना वा आत्म- रूप का सोचना क्या है — यह साथ-साथ करते चलो तो 'लौकिक से अलौकिक' जीवन सहज अनुभव करेंगे।